आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 05-10-14

आज बापदादा हम भाग्यशाली आत्माओं को एक ही समय में चार रूप में देख रहे हैं. हम आत्माओं के चार स्वरूप हमारे अभी के पार्ट के आधार पर बनते हैं. यह चार स्वरूप है - शिववंशी, ब्रह्मावंशी, देवता वंशी और इष्ट वंशी. इसमें पहले दो वंशी तो सब आत्माये बनती है लेकिन तीसरे और चोथा हमारे अभी के पुरुषार्थ के आधार से नम्बरवार बनते हैं.

देव वंशी को राज वंशी भी कहा जाता हैं और इष्ट वंशी को पूज्य वंशी भी कहा जाता हैं. बापदादा ने कहा, जैसे राज वंशी में नम्बरवार होता हैं वैसे पूज्य वंशी में भी नम्बरवार होते हैं. इसलिए भक्ति में भी कोई-कोई इष्ट देवी-देवताओं की पूजा हर रोज होती हैं, किसी की कभी-कभी और किसी की तो साल में एक बार.

अब हमारी पूजा भक्त हर रोज करें इसलिए हमारे में जो भी विशेषतायें होनी चाहिए वह भी बाबदादा ने आज बताई हैं. तो आज हम सब अपने में चेक करें की यह सब विशेषतायें मेरे में कहा तक आई हैं.

हमारे में ऊँच इष्ट देवी-देवता बनने की कोन सी विशेषतायें होनी चाहिए?

१. इष्ट देव आत्मा सदा रहमदिल होगी. हर आत्माको भटकने वा भिखारीपन से बचाने का. हरेक के ऊपर रहम करेगा. निष्काम रहमदिल होगा. बेहद के रूप में रहमदिल होगा. उनके रहम के संकल्प से अन्य आत्माओं को अपने रुहानी रूप या रुह की मंजिल सेकण्ड में स्मृति में आ जायेंगी. उनके रहम के संकल्प से भिखारीओं को सर्व खजानों की झलक दिखाई देगी. भटकती हुई आत्माओं को मुक्ति वा जिवनमुक्ति का किनारा वा मंजिल सामने दिखाई देगी. संस्कार -- बेहद विश्व की मनसा सेवा, बेहद के रहमदिल होकर, अमृतवेले और साम को हर रोज करें.

२. इष्ट देव आत्मा सदैव सर्व के दुख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट अवश्य बजायेगी. दूसरे के दुख अपने दुख समान समझ सहन नहीं कर सकेगी. दूसरे का दुख को भूलाने की वा दुखी को सुखी करने की युक्ति वा साधन सदा उसके पास जादू की चाबी के मुआफिक होगी.

संस्कार -- दुख हर्ता - सुख कर्ता के संस्कार इमर्ज रूप में होंगे.

३. सदा संकल्प, बोल और कर्म से प्यूरिटी की पर्सानालिटी दिखाई देगी.
संस्कार - पवित्र वृति, पवित्र दृष्टि और पवित्र कृति.
४. सदा स्वभाव में, संस्कार में और चलन में सिम्पूल लेकिन श्रेष्ठ दिखाई देंगे.
संस्कार - स्वच्छ और सादगी भरा स्वभाव

५. जैसे आपके जड़ चित्र सदा श्रृंगारे हुए दिखाये हैं वैसे सर्व गुणों के श्रृंगार सदा सजे सजाये नजर आयेंगे. कोई एक गुण रुपी श्रृंगार भी कम नहीं होगा.
संस्कार - सर्वगुण (दिव्य-गुणों और देवी-गुणों) से सम्पन्न.

६. ऐसी इष्ट आत्मा के फीचर्स सदा स्वयं भी कमाल होंगे और दूसरे को भी कमल समान न्यारा और प्यारा बना देंगे.
संस्कार - न्यारा और प्यारा

७. ऐसी इष्ट आत्मा सदा स्थिति में अचल अड़ोल होगी. जैसे मूर्ति को स्थापित करते हैं, वैसे वह चैतन्य मूर्ति सदा एकरस स्थिति में स्थित होगी.
संस्कार - अचल और अड़ोल आत्मा, अंगद के समान

८. वह सदा सर्व के प्रति संकल्प और बोल में वरदानी होंगे. ग्लानि वा शिकायत करने वाले के ऊपर भी वरदानी.
संस्कार - सदा सर्व के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना के बोल ही निकलेंगे. ग्लानि करने वाले पर भी सदा को सुख का, शांति का वरदान देने वाला.

अभी हम सब अपने में चेक करें कि हमारे स्वभाव-संस्कार, ऊपर जो विशेषतायें बताई है उसके अनुसार कहा तक हुए है? अगर कोई छोटी-मोटी खामियां है तो उसे अभी हमें अपने पर वर्क (work) करके ही समाप्त करनी ही हैं.

ॐ शांति.